# राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 8 अंक : 99 15 जुलाई 2005

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : रुपए 40/-

भारत व नेपाल में

एक प्रतिः रुपए 5/-


## इस अंक में

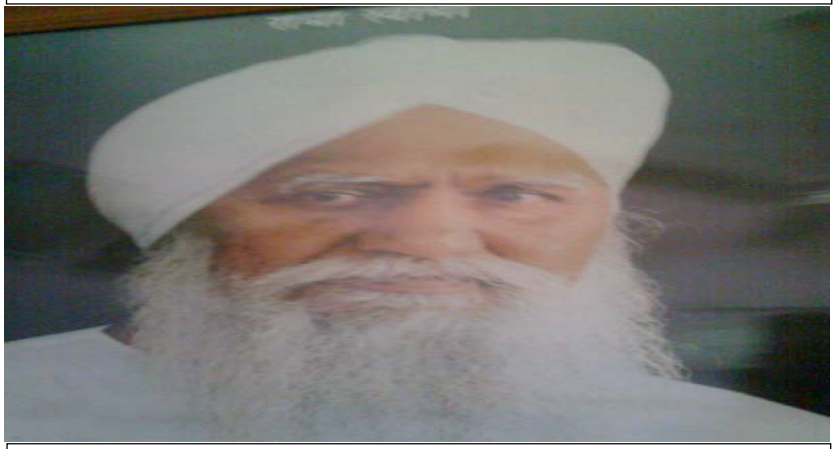


राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित



फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org




| | | |
|---|---|---|
| भिवानी | : | कैसेट क्रमांक : 108 |
| दिनांक | : | 3 अप्रैल, 1993 |
| समय | : | सायं |

**राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!**
**राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!**

प्रेमियों, सत्संगियों, माताओ और बहनों! जितने भी सत्संगी प्रेमी आए हुए हैं सब से विनती है कि जब तक सत्संग हो शांति से सुनते रहें।

मुझे उम्मीद नहीं थी कि इतनी संगत आएगी। नहीं तो मैं और पहले आ जाता। पर वहाँ भी भारी भीड़ थी। वहाँ तो बड़ी भारी संगत गई हुई है। अब ४ बजकर २५ मिनट हुए हैं। पाँच बजे नामदान का टाइम है। फाल्गुण का सत्संग कब था? उसके पीछे मैंने एक दिन भी आराम नहीं किया है। रात और दिन के सत्संग चलते रहे हैं। काफी भाई तो ऐसे भी रह गए जो कहते रहे कि हमारे यहाँ सत्संग नहीं किया। बेचारे उदास हो गए। फिर भी मैंने बहुत भागा दौड़ी करके हर जगह सत्संग किया है। अब भी कोई शांति नहीं है। अब भी ऐसा ही है आज यहाँ आया हूँ तो कल भी कहीं जाना है। परसो फिर जाना है। तो यही भागा दौड़ रहेगी। पर मुझे ऐसा आदमी कोई भी नहीं मिलता है जो यह बात कह दे कि महाराज जी की हिम्मत ही है। इनकी हिम्मत इन्हीं के पास है और ये ही जानते हैं। इतना कोई कहने वाला अगर मिल जाए तो मैं फिर हारूंगा नहीं। बच्चे से किसी से काम लेना है तो यही कहते हैं कि हमारा लड़का बहुत काम करता है। मुझे बच्चा कहने वाला है ही। चाचा साधुराम कह सकता है। इस तरह के तो और

भी बहुत बता दूंगा। एक दिन तो भाई आए थे ये पुलिस के थे। अफसर कौन से थे पर उन्होंने नाम ब्यास से ले रखा था। उन्होंने कहा–हमने आपकी कैसेट सुनी थी। मैंने कहा–बैठ जाओ। उन्होंने कहा–कैसेट सुनने से ही हमें पता चला कि कोई चीज है। मैंने कहा–मैं तो यहाँ बैठा हूँ भाई। देख लो। अब जो उन्होंने बातें की वे बातें तो आपको नहीं बताऊँगा। बेचारे खुश थे और बहुत ही अच्छी बातें की। दूसरी जगह वाले भी अगर ऐसी बातें कहते हैं तो यह बहुत बड़ी बात है। फिर भी इन्सान को सोचना पड़ता है जो हिम्मत करता है, उसकी मालिक भी आप मदद कर देता है। सुना है कि हिम्मत का राम हिमायती होता है। हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। इन्सान कोई भी काम करता है, अगर वह हिम्मत हार जाएगा तो वह गिर जाएगा। कोई भी काम हो, इन्सान क्या कुछ नहीं कर सकता है? वह सब कुछ ही कर सकता है। जो इन्सान हिम्मत हार जाता है, वह कुछ भी नहीं कर सकता है। जो इन्सान हिम्मत रखता है वह चाहे सो कर सकता है। मैंने तो मेरे सतगुरु से यही एक बात सीखी थी। अरमान साहब की बड़ी भारी अपार दया थी। वे कहा करते थे कि हिम्मत थी जैसे भी सतगुरु की दया रही काम करते रहे। अब भी कहते हैं कि करते रहो। काम करने वाला कभी भी गिरेगा नहीं। काम करने वाला कभी भी पीछे नहीं हटेगा। पीछे तो नालायक जो काम नहीं करते हैं वे ही हटते हैं। मैं बनी बनाई जगह पर नहीं आया। अगर तुम पूछना चाहते हो तो मेरा पुराना साथी भाई रतीराम है। जितनी भी नींव रखी गई हैं इसके आगे ही रखी गई हैं। फिर अगर आप यह कहो कि इसको ही नाम क्यों लेते हो? इसका नाम यू लेता हूँ कि कोई तो चले गए, चोला छोड़ गए। कोई वैसे ही घमण्ड में आकर छोड़ गए कि हमारी यहाँ पर पूजा नहीं होती है। कई मान बड़ाई में आकर छोड़ गए कि हम चले जाएँगे तो हमारे बिना यह क्या कर लेगा? चला



तो यह भी गया था। यह समझदार है, उर्दू पढ़ा हुआ है। बहुत हुशियार है। कई दिन तक नहीं आया। लेकिन इसके घर से जो सरती है वह देवता है बड़ी भारी। आप यू कहोगे कि भाई की निंदा करते हो और उसको सराहते हो। नहीं मैं इसकी निंदा नहीं करता हूँ। मैं तो सराहता हूँ कि आदमी तो वही होता है जो साथ नहीं छोड़ता है। साथ ही रहता है तो इसके ही वक्त की बात है। क्या हाल था। मेरी यह हिम्मत थी कि देखो ये लोगों के भंडारे चलते हैं और डेरे बनते हैं। ये किस तरह से क्या बनेंगे? पर बनेंगे। पर मैं अपनी बातें बताता हूँ आज। ये नोट करने की हैं। सत्संग में जाओ कहीं भी जाओ। हिम्मत मत हारो। मैंने हिम्मत नहीं हारी। बड़े–बड़े साथी आए। आए किसी व्यवहार में और चले गए किसी में। सब ही साथ छोड़ते गए। इनका मैं नाम लेता हूँ। दो ही ऐसे आदमी थे–एक अमरचन्द है। ये समझदार है वह बेवकूफ है। वह बहुत पक्का आदमी है। फिर तो काफी आदमी आ गए और वे डिगे नहीं। मैं पुरानी बातें कहता हूँ। जब मैं दुखी था, उस वक्त की बातें हैं। गांव में भी काफी आए और चले गए। जाते रहे। इस तरह ही होता रहा। मेरी नियत यही रहा करती थी कि मालिक! मैं भंडारे लगते देखूं। मैं संगत को देखूं। मैं सच्ची बाते कहता हूँ कि मैं जगह–जगह कूंवे बना दूं। पानी की कमी हो वहीं पानी निकल आए और मैं कूंवे बना दूँ। यह तो मैं बता नहीं सकता हूँ। गांव वाले और ही बता देंगे। सो मेरे विचार गंदे नहीं पड़े। अच्छे ही रहे कि यह बन जाए। वह बन जाए। इस भिवानी के आश्रम के लिए तो शायद बदरी कवि ने भी लिखा होगा। महाराज जी ने भी लिखा था। मुझे याद नहीं है। उन्होंने कहा था कि उस दिन काम पूरा होगा जिस दिन भिवानी में कुटिया बन जाएगी। यह तो उनका भाव था या ख्याल था मैं तो क्या कह सकता हूँ। मेरा तो था नहीं और न मेरे पास चार पैसे थे। न मैं कोई विद्वान था। न मेरी कोई

दुहाई फिरती थी। मेरा तो सब कुछ सतगुरु ही था। यह बात जरूर है और मैं इस बात पर अपने भाग्य को सराहता हूँ कि मेरे सतगुरु जैसा सतगुरु किसी को मिला नहीं होगा। मेरे सतगुरु जैसा सतगुरु किसी को मिला नहीं होगा। मेरे सतगुरु पूर्ण पुरुष थे। महाराज फकीरचन्द अपने गुरु की बड़ाई किया करता था और कहा करता था कि जब मैं अपने गुरु के पास गया तो मैं रुपए लेकर गया। मेरी तनख्वाह बहुत थी। चांदी के हुक्के बनवा कर लाया। बड़े ताज चढ़ाए। मैंने अपने सतगुरु के साथ ऐसा तो कभी नहीं किया। उन्होंने बताया था कि मैं एक बार इतने रुपये लेकर गया कि एक पेटी में डाल कर ले गया था और वहां जाकर उनके आगे रख दिए। उन्होंने कहा कि फकीर! क्या लया है? उन्होंने कहा–मैं ये लाया हूं। देख लो। उन्होंने कहा–अरे पगला! इन रुपयों से परमात्मा थोड़े ही मिलेगा। अप्रेम बच्चों को देने थे पगला! उन्होंने कहा–महाराज! मैं तो आपके लिए ही लाया हूं। उन्होने कहा–अच्छा! थोड़ी ही देर बाद उन्होंने कहा–ये लड़की कौन है? वह महाराज फकीरचन्द की धर्मपत्नी थी। मैं बातें ही नहीं बताता। मैं सत्संग भी कराता हूं। इसे तुम अपने दिमाग में बिठाओ और गुरुओं पर भाव और विश्वास लाओ कि सतगुरु कैसे होते हैं। पर मैं अपनी बातें नहीं कह सकता। मेरे बाद मेरे सत्संगी कह देंगे। फकीर ने तो एक ही बात ऐसी कही है। मैं आप लोगों को सतरह बातें ऐसी बता दूंगा। क्यों मैं ऐसी बातें बताऊंगा? इसीलिए कि मेरे सतगुरु पूर्ण पुरुष थे। करणी के धनी और त्यागी थे। सो उन्होंने पूछा–यह मेरी धर्मपत्नी है। फिर उन्होंने पूछा–ये मेरी क्या लगती है? उन्होंने कहा–मुझे क्या पता? उन्होंने कहा–यह मेरी बेटी है। क्या ये मानेगा? उन्होंने कहा–हां, मानूंगा। यह आपकी बेटी है। उन्होंने कहा–मैं इसको कोई चीज देता हूं तो तुझे तो कोई एतराज नहीं है। उन्होंने कहा–कोई एतराज नहीं है। उन्होंने उसको बुलाकर



कहा–बेटी! यह रुपए संभाल। यह पागल है। तुझे कुछ नहीं देगा। यह मेरे रुपये हैं और ये मैं अपनी बेटी को देता हूं। इनसे अपना काम चला लेना। चार हजार रुपये थे। वे महाराज जी ने उनकी झोली में डाल दिए। वे ले गई। वे भी कैसी भाग्य वाली माता थीं। ये कमाल की बातें हैं। उसने तीस हजार सत्संगियों को भोजन करवाया। वह ब्याज लाया करती थी। ब्याज पर जमा करवा दिए और उस ब्याज से भोजन लाया करती थी और जब चोला छोड़ा तो चार हजार रुपये उनमें और भी मिलाए। उस माता जी ने उस महाराज फकीरचन्द की घरवाली ने उसका भागों नाम था उसने कहा कि मेरे सूत कात कर इकट्ठे किए हुए है। ये मेरे गुरु के उन रुपयों में मिला देना। ये मेरे गुरु की समाधि पर लगा देना। यह बात पुस्तकों में लिखी और बार–बार यह बात कही। मैं आप लोगों के आगे बनावटी बातें नहीं कहता हूं। मेरे सतगुरु ऐसे थे। यहां भी कोई न कोई सत्संगी होगा। उन्होंने एक दिन सत्संग में खड़े होकर कहा था। मुझे ये बातें याद नहीं रहती। अब तो काफी बातें याद नहीं रहती हैं। ताऊ हरलाल था। वह यहां होगा। रतीराम होगा और शायद मास्टर होगा। महाराज फकीरचन्द ने दिल्ली के सत्संग क पालसिंह के पास ये बातें कहीं कि धन्य हो! मेरे भाई रामसिंह ने एक संत बना दिया। मेरे से तो आज तक एक संत नहीं बना। ये मैं उनकी बातें बताता हूं और उन्होंने कहा था कि मैं गौड़ ब्राह्मण हूं। राधास्वामी धाम से आया हूं। मैं राधास्वामी और कुल मालिक हूं। उनसे संत नहीं बना। मेरे गुरु महाराज अरमान साहब ने कभी भी ये बातें नहीं कहीं कि मैं राधास्वामी धाम से आया हूं। मैं परमसंत हूं या कुछ हूं। उन्होंने उनके बारे में कहा कि इन्होंने एक संत बना दिया। हालांकि संत तो अपने विचारों से बना जाता है। तुम सभी संत बन सकते हो। कैसे बन सकते हो? सतयुग को सतयुग कैसे कहा गया? आज भी काफी लोगों के लिए सतयुग है।

सतयुग किसको कहते हैं? जो सत्यवादी आदमी है उनके लिए तो हमेशा ही सतयुग रहता है। जो दुष्ट होते हैं उनके लिए कलियुग सतयुग में भी रहता है। क्या सतयुग में राक्षस नहीं थे? सतयुग में कितने राक्षस हुए हैं? उनके लिए तो सतयुग नहीं था। जो दुष्ट आदमी होते हैं उनके लिए सतयुग में भी कलयुग है और सज्जन आदमी हैं उनके लिए आज कलयुग में भी सतयुग है। यह तो अपने–अपने विचार पर निर्भर है। तुम सतयुगी बनो कलयुगी मत बनो। मुझे एक प्रेमी ने कहा–मैंने एक बात सुनी है। मैंने कहा–बताओ। उन्होंने कहा–मैं लड़ाई नहीं करता हूं। आप अपने गुरु भाई हैं उनके पास जाते हो वे तो यह कहते हैं लोगों में बैठ कर कि वह हमारे आगे हाथ जोड़ने के लिए आता है कि मेरे पास आओ, चलो। वह यही विनती करता है। मैंने कहा–हां! बिल्कुल विनती करता हूं। उसने कहा–वे यह भी कहते हैं कि उसे हमारी गर्ज है। हमें तो उसकी गर्ज है नहीं। एक सज्जन आदमी ने कहा–अगर इन ही बातों को पहचान लोगे तो तिर जाओगे। यही तो बात होती है कि उसे कोई गर्ज नहीं है और फिर भी वह तुम्हारे पास आ जाता है तो तुम डूब कर मर जाओ और तुम लोग डूब भी जाओगे। जो गर्ज को आता है यह तो गर्ज मतलब की होती है और जिसे कोई गर्ज नहीं है आना जाना तो वहीं है। मैं तो हर एक के ही बारें में यही सोचा करता हूं कि सब भाई खुश हों और प्यार करें। सभी ठीक रहें मैंने कभी किसी से बैर बांधने की कोशिश न की और न कोशिश करता हूं। मेरा और मानव दयाल का कुछ मतभेद था। मैं उसको गद्दी पर रखने वाला था। उसने खुद ने ही कहा था वे हुश्यारपुर के गुरु बने हैं ये उन्होंने नेगी डी. आई. जी. के आगे और कनाडा में नंद सिहरा उसके आगे कहा कि यही मुझे गद्दी पर बिठाने वाला है। नहीं तो ये मुझे गद्दी पर बैठने नहीं देते और कुछ बातें मैंने उसको कही। उसका दिमाग कुछ खराब सा हो



गया। उससे कुछ कहा तो आज उसका टेलीग्राम आया है मेरे पास, उसकी धर्मपत्नी चलती रही तो मास्टर से कहा कि चलना है। इसने कहा–नहीं चलते। मैंने कहा–क्यों? मैंने कहा–वाह भई वाह! फिर तो तुम वैसे ही हो जाओगे। उसने टेलीग्राम दिया है वह गुजर गई है। अपना चलना उचित है। यह क्या बुरी बात है? क्या हम अपने स्वार्थ के लिए जाते हैं? अपने हिसाब से जाते हैं। बड़ा कौन होता है? क ष्ण जी महाराज बड़े थे। जो बड़ा काम करता है वही बड़ा होता है। अपने आप को बड़ा कहता है और काम करता है गिरे हुए तो उसे बड़ा कौन कहेगा? अपने को आप ही बड़ा कह लो दूसरे नहीं तो इस तरह आदमी गिर जाता है। बड़ा काम करता है, वही बड़ा होता है। तुम बड़े काम करो। क ष्ण जी महाराज के सब गीत गाते हैं। उसने ऐसे काम किए। तुम मत मानो। मैंने खुद किए, दिल्ली में पूषा रोड़ पर सत्संग हुआ करता था। मैंने खुद पाखाने साफ किए हुए हैं ब्यास वालों के डेरे में। एक दिन मैंने आटा गूंदा और बहुत से काम किए। पाखानों का काम आया तो मैंने कहा–मैं डालूंगा पानी। क्या इससे मेरी गिरावट हुई? सेवा करने वाला, काम करने वाला गिरता नहीं है, कभी भी। सेवा करने वाला चढ़ता है। सेवा मिलनी चाहिए कि हमें सेवा मिल जाए। क ष्ण जी महाराज की वाह–वाह हो गई। क्योंकि उन्होंने सब से छोटी सेवा ली। यह बर्तन साफ करने और पत्तल उठाने की सेवा कौन लेगा? क ष्ण जी महाराज ने ली। ये बातें सुनी होंगी। फिर भी घटिया आदमी नहीं रूके। कहते हैं–

**हल्दी जरदी ना तजे खटरस तजे न आम।**
**गुणवता गुण ना तजे, अवगुण तजे न गुलाम।।**

छोटी सेवा उन्होंने ली। फिर भी शिशुपाल था। उसने ठोकर मारी। उसके एक सौ एक खोटे बख्शने मंजूर किये थे। क ष्ण जी ने कहा था कि भूआ, मैं एक सो एक खोटे बख्श दूंगा। भूआ ने

कहा–भाई! इतने तो ये करेगा ही नहीं। फिर तो यह जीवित रह जाएगा। पर जब उल्टा दिन आता है तब आदमी रूक नहीं सकता। क ष्ण जी को जब वे बर्तन साफ कर रहे थे तो एक सौ एक ठोकरें मार दी। क ष्ण जी ने कह दिया कि अब तू होश कर ले। अब तेरा वक्त आ चुका है। इतने खोटे जो भूआ ने कहे थे वे तो तेरे माफ कर दिए हैं। सो बड़े आदमी जो होते हैं वे किसी के ऐब नहीं देखते हैं और न वे अहसान करके कहते हैं कि हमने यह अहसान किया है। मैं अगर मेरे अपने ही सत्संगी से जो घटिया बात कर देता है उससे विरोध करूं तो अच्छी बात नहीं है। उसको सीधे रास्ते पर ले आऊं तो अच्छा है। आप लोग अपने ऊपर घटाओ इन बातों को कभी मेरे ऊपर ही ले आओ। मैं जो बातें कहना चाहता था वे बातें तो बाकी ही हैं।

तुम महात्मा और सत्संगी बनो, सतगुरु बनो। ऐसी कोई भी बात नहीं है। बन सकते हो। दो सतगुरु होते हैं। एक सतगुरु होता है, स्वतः संत आता है वह नर्क में हाथ नहीं देता है। वह तो स्वतः संत आता है और मैदान में आता है। मैदान में आकर अपना काम करके चला जाता है। यहां आकर जो संत बनते हैं उनको सतगुरु ही संत बनाता है। वह जो यहां आकर बनते हैं वे गद्दी के गुरु बनकर काम कर जाते हैं। कर भी लेते हैं। वे स्वतः संत नहीं होते हैं। ये गुरु के बनाए हुए सतगुरु होते हैं। स्वतः संत तो धुर दरगाह से आता है। उसकी निशानी क्या है? यह तो मैं कह भी नहीं सकता हूं। समझने वाले समझ जाएंगे। इशारा तो बहुत कर देता हूं। उनको न विद्या की जरूरत है न ही रूप की, न धन की ही जरूरत है। न ही इश्तिहार कढ़वाने की जरूरत है। न उनको ढोल बजवाने की जरूरत है। उन्हें तो एक खुदा से बंदगी करने की ही जरूरत होती है। उन्हें तो एक खुदा से बंदगी करने की ही जरूरत होती है। फिर तुम कहोगे कि जब वे धुर से आते हैं तो बंदगी क्या



करते हैं? बदंगी तो फिर भी करनी पड़ती है। यह बात गलत है। पूरा भी पूरा काम करता है। फिर भी अपना नेम नहीं तोड़ते हैं। वे ही अगर नेम तोड़ देंगे तो फिर संसारियों का तो डूटा ही पड़ा है। क ष्ण जी ने भी यह बात कही है कि मैं अपने नेम को रखता हूं। नहाने से लेकर के जितने भी कर्म है सभी करने चाहिए। नहीं तो संसारी लोग भी अपने कर्म को छोड़ देंगे। अगर मैं ध्यान में नहीं बैठूंगा तो मेरे सत्संगी भी नहीं बैठेंगे। मैं मुर्दा आसन में लेट जाता हूं। मेरे सत्संगियों को यह आदत पड़ गई कइयों को। कह देते हैं कि आप भी तो मुर्दा आसन में लेटते हो। मैंने कहा कि मेरी बातें छोड़ दो। अपना व्यवहार ठीक करो। मेरी बातों पर मत चलो। जब मैं आपको कहता हूं।

मैं एक मिशाल देकर बताता हूं। मेरा बाप जेवड़ी (रस्सी) बांटा करता था। मैं भी रस्सी बांटा करता था। जब वह बाण बांटता था तो उन रस्सियों में लफूसड़े (रेसे) छोड़ देता था। लफूसड़ों वाली रस्सी सस्ती बिकती है। मेरे बाप ने मुझसे कहा–तू इनमें लफूसड़े मत छोड़। क्योंकि लफूसड़े छोड़ेगा तो रस्सी मंदी बिकेगी। मैंने कहा–तू भी तो लफूसड़े छोड़ता है। उसने कहा–मुझे तो लफूसड़े छोड़ने की बाण पड़ गई है। तू मत छोड़ सोचो! मैं क्या कहता हूं? मुझे तो मुर्दा आसन में लेटने की आदत पड़ गई है। पर आपके लिए यह आसन नहीं है। यह तो उन्हीं के लिए है जिनका व द्ध शरीर है। बूढ़े आदमियों के लिए है जिनकी सुरत काम करती है। जिन्हें शुरू में ही अभ्यास करना है उनके लिए यह आसन जहर है। उनको इस आसन में कभी भी नहीं जाना चाहिए। कोई ऐसा करता हो कभी। उन्हें तो वही आसन लगाना चाहिए जिसे मुर्गाबी आसन कहते हैं। गर्भ आसन कहते हैं जिसको संत महात्मा उकड़ लगाते हैं वह आसन लगाना चाहिए। उस आसन से अनेक बिमारियां दूर होती हैं और बहुत से दुख दूर होते हैं और बड़ी

शान्ति मिलती है। सुरत बहुत जल्दी अपना रास्ता पकड़ लेती है। अगर कोई दुख तकलीफ भी हो तो मेरी बीती हुई बातें बताता हूं। घबराओ मत। लगे रहो। मेरे पास कई शिकायत करते हैं कि मेरा भजन नहीं बनता है। मैं कहता हूं कि तेरे अंदर कमी है। भजन तो पास में ही है। भजन न बने तो कोई भी बात नहीं है। इन्सान क्या कुछ नहीं कर सकता है? वह सब कुछ कर सकता है। भागीरथ गंगा को पहाड़ के ऊपर से ले आया। क्या नहीं किया उसने? सो सारे ही लोग भागीरथ के गीत गाते हैं। पर मैं राजनीति की बातें नहीं करता। हिम्मत वाला आदमी पानी को जमीन के नीचे ही नीचे भ्झी ले गया। सारे राजस्थान में गधे प्यासे मरते थे। अब वहां कौए नहाते हैं। यह हिम्मत थी तभी तो ले गए। इसीलिए अपनी हिम्मत मत हारो। जो हिम्मत हार जाता है वह गिर जाता है। किसी भी चीज से हिम्मत मत हारो। सच्चाई से काम करो।

मैं आप लोगों को बताता हूं फकीरचन्द महाराज की बातें। वे किताबों में लिखा करते थे। चाचा साधुराम बैठे हैं। मेरे पास एक लड़की यहा भी आई हुई होगी। उसने मुझे बहुत पैसे देने शुरू कर दिए। फिर कोई दुर्घटना हो गई और उसके मांगने वाले चारो तरफ से इकट्ठे हो गए। वह अज्ञान में थी। मैंने कहा–मास्टर! ये पैसे हमें खा जाएंगे। हमारे डेरे का सत्यानाश कर देंगे अगर इन को बरत लिया तो। मास्टर ने कहा–ये मानते तो नहीं हैं। ये तो अज्ञानी हैं। मैंने कहा–मैं इनको मनवा लूंगा। मैंने उन पैसों को इकट्ठे ही एक थैले में डालना शुरू कर दिया। जब उनके ऊपर तकलीफ पड़ी और उस वक्त उसके आदमी ने वहां जाकर कहा–मेरे तो मांगने वाले इस–इस तरह से खड़े हो गए। मैं क्या करूं। मैं तो डुबों ही दिया। मैंने कहा–नहीं। डरो मत। मेरे पास बहुत पैसे हैं। पर मैं दूंगा नहीं। तू चाचा साधुराम को ले आना। अब वह पैसे चाचा साधुराम ले गया। अब। जो उसने तीस–चालीस



हजार रुपये थे सब ही वे देते रहे और मैं उस थैले में यू का यू ही डालता रहा। पता नहीं कितने थे। मैंने कहा–ले जाओ। आप क्या कहोगे?

मैं बातें बताता हूं। मेरे पास एक प्रेमी आया, मनीराम का लड़का जो हमारे पास रहता है। वह पांच हजार रुपये लेकर आया। उसने कहा कि मैं आश्रम में दूंगा। मैंने कहा–तेरे बच्चों को पाल पगला! वैसे तो उसके बड़े लड़के ने हरिद्वार में कमरा भी बना दिया। पर उसकी हालत ऐसी ही थी। मैंने उसको कहा कि तू अपने बच्चों को पाल। उसने कहा–मैंने तो ये आश्रम में देने हैं। मास्टर ने कहा–ले लो। इनको भी न्यारे रख देना। वही लड़का बारह महीनों के बाद आया कि मैंने एक प्लाट ले लिया। अब मुझे छः हजार रुपयों की जरूरत है। मैंने कहा–ये ले। तेरे पांच हजार थे और एक हजार तेरे ब्याज के लगा ले। अब बताओ। मैं आपको बातें बताता हूं। क्योंकि मैं देखता हूं कि ये पैसे खा जाएंगे। इस आश्रम को ही। मेरे दिमाग में जंची हुई बातें हैं। इसको पता है मेरे दिनोद के आश्रम में किसी के ऐसे ही पैसे लग गए थे। हमें परेशानी हो गई। मैंने कहा–क्या बात है? हमारी संगत में परेशानी कैसे हुई? इन्होंने कहा–पता नहीं है। मैंने सोच कर कहा–ये पैसे आए थे उसी दिन से परेशानी है। इन्होंने कहा–हां, यही बात है। अगर तुम इस कष्ट से बचना ही चाहते हो तो जानवरों को उसका अनाज डाल दो। तब उनको अनाज डाला और हमारे आश्रम में शांति आ गई। मेरे काम करने वाले थोड़े से आदमी यहां पर हैं पर सब के दिलों में शांति है क्योंकि हम एकसे काम करते ही नहीं है। न मैं धोखा करता हूं और न फरेब करता हूं। उसको मैंने छः हजार रुपये दे दिए। एक और शराबी था, उसका यहां भाई आया होगा। उसका भाई जगमोहन है। जगमोहन ने कहा–वह बहन बड़ी अच्छी है वह सत्संगिन है उसका क्या नाम है। सो जगमोहन ने कहा–ले

लो। ये शराबी है। कहीं तो ये देगा ही मैंने कहा–मैं तो नहीं लेता। उसने फिर कहा–ले लो। उसके पैसे ले लिए। थोड़े दिन के बाद उसने कहा–लड़कों की गाड़ी का टायर फट गया है। मैंने कहा–पांच हजार तो ये हैं और पांच हजार और भी ले जाना। मैं कर्जा साथ की साथ ही उतारता हूं। मैं यह भी बता देता हूं कि संत को जो भी कोई देता है, संत उसका कर्जा उसी वक्त उतार देते हैं। अगर संत का कर्जा दस–पन्द्रह दिन रह जाता है तो संत दागी हो जाता है। यह मैं आप लोगों को बता देता हूं। आप लोग सेवा देते हो उस सेवा का बदला तो उसी वक्त उतर जाता है। संत सेवा का बदला तो उसी वक्त उतर जाता है। संत सतगुरु उसको उसी वक्त उतार देता है किसी न किसी तरह से। उस को रखता नहीं है और जो रह जाता है तो फिर उसको मार ही देता है। यह अच्छा नहीं होता है। इसीलिए संत साथ ही साथ ही अपना कर्जा उतार देते हैं और भी मैं ऐसी बातें बताऊंगा कि मामूली बात तो नहीं थी। हमने यह कोठी ली। कोठी के बेचने वाले ने क्या कहा था? उसने यह कहा था कि मुझे तो दो या सवा दो लाख रुपये ही दे दो और एक लाख रुपये हमारे सेवा में लगा लो। इसमें से ये काट दो। हम तो सेवा में ही देना चाहते हैं। मैंने कहा–तू अपने सवा दो लाख रुपये ले ले। पर जो एक लाख रुपए फालतू बचते हैं तो वह धन तुम दोनों भाई अपनी–अपनी धर्मपत्नियों को दे दो। ये दोनों बेटी है। अगर वे उनके नाम करें तो उनका धर्म ठहरा। मैंने तो उनको दिला दिए। उन्होंने तो यही कहा था कि एक लाख रुपये हमारे सेवा में लगा दो। मैंने कहा–नहीं। तुम सेवा देने के ढंग में नहीं हो। सो उनको वे रुपये वापिस दिलवा दिए। मैंने तो यही सलाह दी कि तुम अपनी–अपनी धर्मपत्नियों के नाम करवा दो। आज जो सत्संग में आते हैं लोग स्वार्थ के लिए आते हैं। स्वार्थ के लिए ही गुरु बनाते हैं।



मैं और भी ऐसी बातें बता देता हूं। इसको दो लड़के हैं। तुम आश औलाद से पूछो–मेरे पास मास्टर बैठा है। एक लाख तीस हजार रुपये थैले में रखकर मेरे पास आकर रख दिए। मैंने हाथ लगा कर देखा। मैंने कहा–यह तो भाई नोटों की गड्डी है। मैंने कहा–मास्टर दौड़ कर आ। यह देख क्या रहा? इसने कहा–क्या है? मैंने कहा कि इसमें सर्प, गुटेरे हैं। इसने देखे और पूछा कि कौन लाया है? मैंने बताया कि यह लड़की और उसका भाई लाए हैं। इसने कहा–यह कैसे हैं? मैंने कहा–इनको वापिस दे दे। नहीं तो अपना नाश हो जाएगा। ये भी अज्ञानता में लाए हैं ज्ञान में नहीं। ज्ञान में इतनी सेवा कौन करता है? मैं कोई नोट छापता नहीं हूँ। ये सब संग के ही पैसे हैं। ये पैसे उसको देने पड़े। मैंने उससे नेम करवाया कि तू मेरा कहा तो मानते हो। उसने कहा–हाँ। मैंने कहा–मैंने ले लिए तुम्हारे ये उसने कहा–हाँ। मैंने कहा–मैंने ले लिए तुम्हारे ये रुपये लो। पर तुम्हारा भाई गरीब है। तेरे भाई को दे दे।

मैं न तो आर्य धर्म की निंदा करता हूँ और न ही सनातन ध र्म की निंदा करता हूँ। न मैं जैनियों और मुसलमानों की कोई निंदा करता हूँ। सभी धर्म पवित्र है। धर्म कोई भी घटिया नहीं है। इन्सान घटिया हो जाते हैं। धर्म तो दो नहीं है एक ही है। जैसे सब इन्सान एक ही रास्ते से आए है, उसी तरह से धर्म भी सबका एक ही है। सब के सब मुँह से खाते हैं और गुदा से निकालते हैं। पेशाब का रास्ता भी उसी प्रकार से एक ही है। दो नहीं हैं। पर आप कहोगे कि ये इतने मजहब भी क्यों बने हैं। ये मजहब तो पेटकुटों ने ही बना ए है। धर्म देखा जाए तो सबका एक ही है और इस एम धर्म को सुझकर आए तो बातें भी कर लो। धर्म को छोड़ कोई कहता है कि हम ब्राह्मण बड़े है। सोचिए, क्या कहा है? कोई कहता है कि हम क्षत्रीय बड़े हैं। कोई कहता कि हम जाट बड़े हैं।

कोई कहता है कि हम जाति वाले बड़े हैं। इस दशा को कोई भी नहीं समझता है। बड़े तो सारे ही है। बल्कि अगर शूद्र रूष्ट हो जाए तो इन तीनों को जगह नहीं रहेंगी। इसी लिए संसार में संत महात्माओं ने बड़े अच्छे विचार से बातें बताई है। हमारे ऋषि–मुनियों की भी यही चाल थी। उन्होंने ये चार हिस्से शरीर के किए हैं। पर ये कब किए जाते हैं। सतगुरु पूर्ण और सच्चा हो वही इनको समझा सकता है। हमने जातियाँ बना दी। चार जातियाँ बना दी। क्षत्रिय, वैश्व, ब्राह्मण और शुद्र। अब बताओ। अब ये तो नहीं बताया कि हमारी तो दो ही जातियाँ थी। स्त्री और पुरुष। फिर ये जातियाँ किसने बनाई? ये हमारे कर्म ने बनाई है। मनु जी महाराज ने बनाई कि कर्म जैसा जो करता गया वैसा ही वह बनता गया। पर असली बात को तो हम भूल ही गए। वह कौन सी बात थी असलियत में तो इस शरीर के ही चार हिस्से बनाए थे। इस शरीर के हिस्से बनाए थे। इस शरीर के हिस्से लेकर हमने बाहर चार वर्ण बना दिए। मुझे तो ये भी पता नहीं है कि वर्ण किसे कहते हैं। मैं तो सुनी हुई बातें कहता हूँ। वर्ण जाति को ही कहते होंगे।

असलियत में देखा जाए तो ये चारों भाग इस शरीर में ही हैं। मस्तक है–ब्राह्मण, इसमें से ब्रह्म की बातें निकलती हैं। यही जब ब्रह्म में लीन है। इसमें जो पहुँच जाता है ऊपर उसे ही ब्रह्मलीन महात्मा कहा जाता है। उसी से वेद और शास्त्र बने हैं। कुरान और पुराण बने हैं। वही खुदा बन जाता है। यहाँ पहुँच कर हिन्दू उसको सोहं कहते हैं, हिन्दू उसको अनलहक कहते हैं। सोहं का अर्थ पढ़े लिखे लगा लेंगे। सोहं का अर्थ तो यही होता है कि तू भी ब्रह्म और मैं भी ब्रह्म और ब्रह्म क्या है तू भी काल है और मैं भी काल हूँ। यह काल का नाम है। बल्कि फकीर साहब ने तो इसे महाकाल बताया है–

**सोहं सोहं क्या करे सरा न एको काज।**



सोहं से तो एक काज भी नहीं बना। ये कबीर का दोहा है याद नहीं है। इसीलिए हम गिर जाते हैं। जब हम इससे ऊपर जाती है, ब्रह्म में पहुँच जाते हैं तो ब्रह्म लीन महात्मा कहते हैं उसको। वहीं जाकर जन्म–मरण मिटता है। इससे नीचे नीचे जन्म–मरण मिट नहीं सकता। क्योंकि इससे नीचे कब्रिस्तान है। ऊपर जाओगे तो दूसरा देश आ जाएगा। इसमें कब्रें खोदोगे तो मुर्दे ही निकलेंगे। यह मुर्दों की भक्ति, काल की भक्ति है। यह कभी आगे नहीं जाने देती है। इसीलिए इसे कहते हैं कि यह तो ब्रह्म है। इसको ब्राह्मण कह दिया। हमारे हाथ है ये क्षेत्रीय हैं कहीं भी शरीर पर चोट ह्योगी तो पहले हाथ ही अड़ेंगे। अब ब्राह्मणों का पहले क्या था? जो ब्रह्म में लीन होते थे वे उदासीन रहते थे। उनको न अपने बच्चों का ही ख्याल था न अपने परिवार का ही ख्याल था न अपने शरीर का ही ख्याल था। वे ब्रह्म में लीन रहते थे। उनकी रखवाली क्षत्रीय कहा गया। उनके बच्चों का जो पालन–पोषण किया करते थे उनका नाम शूद्र रखा गया। वे सारा काम करते थे। इस तरह से ये बाहर की जातियां बना कर बैठ गए। जातियां तो ये थीं कि यह शरीर है इसके चार हिस्से बनाए थे मस्तक है ये ब्राह्मण हैं इनको ताकत क्षत्रियों से मिलती है। वैश्व और शूद्रों से ताकत मिलती है। अगर वैश्व और शूद्र इनसे नाराज हो जाए तो यह कुछ भी नहीं कर सकता है। यह तो पागल ही हो जाएगा। पर अगर यह ब्राह्मण नाराज हो जाए तो ये तीनों बेकार हो जाते हैं। जिसका मस्तक ही खराब हो जाता है उसके ये तीनों ही बेकार और शराब हो जाते हैं। आप देखते हो कितने पागल घूमते हैं। ये क्या कर सकते हैं? उनका ब्राह्मण ही नाराज हो जाता है। जब चारों की एकता हो तभी हम जीवित रह सकते हैं। चारों की एकता का मतलब है कि ब्राह्मण भी सच्चा और पूरा हो। यानी हमारा दिमाग ठीक होना चाहिए, ये ब्राह्मण है। हमारी

दोनों भुजा भी मजबूत होनी चाहिए, ये क्षत्रीय है। ये हमारे शरीर की रक्षा करने वाला है और हमारा पेट भी ठीक होना चाहिए। कई योगी लोग पेट का बड़ा ख्याल रखते हैं। मुझे याद नहीं है।

महाराज जी बताया करते थे कि एक नेपाल का राजा पकड़ा गया और जब उसको फाँसी टूटने का आदेश आया तो कहते हैं कि उस वक्त उसने अपना लड़का बुलाया। उसने पूछा–क्या तुम किसी से मिलना चाहते हो? उसने कहा–मेरे लड़के को बुला दो। लड़का बुलाया गया। उस लड़के ने पूछा–पिता जी ! क्या बात है? उसने कहा–अपने हाजमें का ख्याल रखना। जाओ। लोगों ने कहा–ये क्या है? राजा ने कहा–क्या यह छोटी बात है? सो महात्मा लोग हाजमें का ख्याल रखते हैं जिसका हाजमा बिगड़ जाता है उसका विष्णु नाराज हो जाता है। उसका वैश्य नाराज हो जाता हैं वह मर जाता है। उस वक्त ब्राह्मण और क्षत्रीय भी दुखी हो जाते हैं। जिसके पेट में बीमारी हो जाती है, क्या उसके हाथ कोई काम कर सकते हैं? क्षत्रीय भी ढीले पड़ जाते हैं उसका दिमाग भी खराब हो जाता है। सो चारों का मेल यूं बताया गया है। ये हाथ क्षत्रीय और पेट वैश्य है। क्योंकि क्षत्रीय हाथ रक्षा करते हैं, सारे शरीर की और पेट को वैश्य क्यों माना गया है? खाया पीया सब पेट में जाता है। पेट में विष्णु का बासा है। वहां जाकर ये सब ही रंगों में बाट दिया जाता है। सो यू ही इसे वैश्य कहते हैं। सारी जातियों को वैश्य कर्ज दिया करते थे। सब की संभाल किया करते थे। सो ये पेट सब को कर्जा देता है। सारा खाया पीया पेट में जाता है और सारी ही रंगों को और ब्राह्मण, क्षत्रीय और शूद्रों को तकसीम कर देता है। अगर एक तरफ से नश–नाड़ियाँ टूट जाए तो सारा ही ढांचा बिगड़ सकता है। सो हमें अपने पेट का ख्याल रखना चाहिए कि कभी भी इसे खराब न करो।



सौ वैश्य नाराज हो गए तो सारा ही देश नाराज हो जाएगा। अब ये तीन तो हो गए। चौथा शूद्र है। यह हमारे पैर हैं। ये इन तीनों को लेकर घूमते रहते हैं। इसलिए कहते हैं कि शूद्र का धर्म ही सेवा करना है। शूद्र नाराज हो जाए तो बाकी तीनों ही बेकार हो जाते हैं। क्षत्रीय, वैश्य और ब्राह्मण भी। सो यह शूद्र सारे ही वजन को उठाए फिरते हैं। संतों ने तो यह मार्ग बताया था। अब तुमने बाहर चार वर्ण बना कर एक झमेला खड़ा कर दिया। पाप ही खरीर बैठे। जाति–पाति में फंसकर झगड़ा कर लिया। इसलिए महात्मा कहते हैं–

**जात नहीं जगदीश के, संतों के भी नाँहि।**
**जो फंसा जात में, लख चौरासी माँहि।।**

क्योंकि जो जाति में फंस जाता है वह नर्को से बच नहीं सकता। जाति तो स्त्री और पुरुष की होती है। ये बात तो जरूर भी मैं कहूँगा। दो ही सम्प्रदाय है–एक देवताओं का सम्प्रदाय और दूसरा राक्षसों का। जो दैवी सम्प्रदाय देवता है। वे इन्सान और आदमी हैं। जो राक्षसों सम्प्रदाय वाले हैं वे राक्षस हैं वे अण्डे, मीट खाते हैं, पापी हैं, सुलफे, गांझे पीते हैं। खोटे कर्मों में पड़े रहते हैं। दैवी सम्प्रदाय वाले सब अच्छे काम करते हैं। विषयों से दूर रहते हैं। मालिक का भजन करते हैं। सतलोक में पहुँच जाते हैं। लोगों को यह पता है कि जिस ईष्ट की पूजा करोगे वहीं जाना पड़ेगा। इसमें झूठ नहीं है, जहाँ का बीजा होगा, वहीं जाना पड़ेगा। जिसकी तुम पूजा करते हो वहां जाना पड़ेगा। मेरे पास कई भाई नाम लिए हुए आते हैं। मैं बैठता हूँ, देखता हूँ। मेरे पास ऐसी कसौटी तो नहीं है। पर सतगुरु की बताई हुई कसौटी है कि मैं उसके पास बैठकर बता देता हूँ कि इसका सुमरन पक्का है इसका सुमरन कच्चा है और यह भी बता देता हूँ कि वह सुमरन भी नहीं करता है। ये बातें छुपी नहीं रहती। जो सतगुरु ने सुमरन बताया

है वे राधास्वामी नाम का सुमरन करने वाला कभी भी काल का मुंह नहीं देख सकते। उसको गंदा स्वप्न नहीं आएगा। कभी भी उसको परेशानी नहीं होगी शरीर में। पर हम तो राधास्वामी नाम का सुमरन ही छोड़ देते हैं। तो फिर किसका सुमरन करते हो? यही तो कहते हैं–

**एक साधे सब सधें, सब साधे सब जाँहि।**
**कहैं कबीर अब सोच समझ मन माँहि।।**

अर्थात् एक के साधने पर सभी सध जाते हैं। वह कौन सा साधना है? वह तो सारी दुनिया की जड़ है। सारी दुनिया का मूल है। उस एक को ही पकड़ लो। एक मूल को पकड़ने के बाद डाली पत्तियाँ हाथ में आ जाती हैं। जब मूल को ही पकड़ लेते हैं तो कुछ भी बाकी नहीं रहता। सब कुछ आ जाता है। पत्ते–पत्तों को पानी देकर सब धोखा जाते हैं। सवैया है इसमें आता है–

**पत्ते-पत्ते सींचते खाली रह संसार।**

सारा खाली रह जाता है। नाम तो नाम ही होता है। नाम नामी से मिला देता है। तब हमारा जीवन सफल हो जाता है। पर मैंने तो यही बातें बताई हैं कि अपने विचार अच्छे रखा करो। पवित्र रखा करो। तुम्हारे ख्याल में बड़ी भारी ताकत है। इतनी भारी ताकत है कि कुछ कहा नहीं जा सकता है। मैंने आपको बताया कि जो अपने अभ्यास और कल्याण के लिए आता है, वह सत्संग में बराबर चला आता है और जो महन्त बन कर आते हैं वे तो तत्काल ही आना बन्द कर देते हैं। वे स्वार्थी बन जाते हैं। वे गिर जाते हैं और फिर वे उस जगह पर आते ही नहीं। सो संतों का मार्ग तो करणी का मार्ग है। बातों का मार्ग नहीं है। करणी करोगे तो पूरा काम मिल जाएगा। न करो तो तुम्हारी मर्जी है। मैंने थोड़ी सी बातें आपको बताई हैं कि संसार में झगड़ा बाजी कुछ भी नहीं हैं। तुम असलियत को नहीं समझते हो। हम असलियत को



अगर समझ जाएँ तो हमारा जीवन ही सफल हो जाए। सो मैंने ये थोड़ी बातें बताई और ज्यादा क्या बताऊँ? अगर फिर सत्संग का टाइम मिला तो एक सत्संग रात को दे दूंगा।

**।। राधास्वामी ।।**

---

| | | |
|---|---|---|
| **भिवानी** | **:** | **कैसेट क्रमांक : 110** |
| **दिनांक** | **:** | **4 अप्रैल, 1993** |
| **समय** | **:** | **प्रातः** |

**राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!**
**राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!**

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! जितने सत्संग प्रेमी आए हुए हैं सब से विनती है कि जब तक सत्संग हो शांति से सुनते रहें।

शाम को भी मैं आपकी हाजरी में कुछ टाइम दे गया था। मैंने यह भी कहा था कि टाइम पर आऊंगा। मैं तो मेरे विचारों में देर करके आया हूं। जैसा टाइम मैंने बताया था उससे देर हो गई है। पर कोई बात नहीं।

हमारे गांव में एक जमींदार था। उसका खेत में मजदूर जाते तो वह कहा करता ळाा कि कोई बात नहीं देर कोई नहीं होती। देर सवेर तो आदमी के हाथ में ही होती है। सो थोड़े ही टाइम में बेहद बातें बताई जा सकती हैं। ब्यास में महाराज जगत सिंह तीस

मिनट ही सत्संग दिया करते थे। सारे जीवन ही ऐसा रहा। इतना ही सत्संग काफी था। सत्संग तो थोड़ा ही काफी होता है।

कल मैंने नाम के विषय में कुछ बताया था। अब भी ये शब्द गा रहे थे कि नाम के बिना कुछ भी नहीं है। नाम से ही तो चिट्ठी आती है। नाम से ही आदमी घर ढूंढता है। ढूंढकर घर पहुंच जाता है। नाम से ही नामी मिलता है। पर नाम होना चाहिए। एक नाम बनावटी है, एक नाम असली है। बनावटी नाम तो हमारा अपना खुद का जो बनाया हुआ हो उसे ही कहते हैं। एक नाम कुदरती होता है उसका धुनात्मा कहते हैं। एक को जाति और एक को सिफाती कह सकते हैं। ऐसे भी समझ सकते हो। जाति नाम की धुनी उठती है। उसे धुनात्मक कहते हैं। सिफाती नाम सिफ्त अथवा गुण के आधार पर होता है। संत जो नाम बताते हैं वह जाति या धुनात्मक होता है। जिस भण्डार से हमारी जीवात्मा या सुरत आई है उसी भण्डार का जो नाम है वही बताते हैं। उसी भण्डार में जाकर शांति मिलती है। वहां जाकर समाप्त होते हैं। वही नाम सारी दुनिया की जान है। आपने सुना होगा–

**नाम, नाम सब कहैं, नाम न चिन्हा कोय।**
**नाम गुरु की दात है, नाम कहावे सोय।।**

नाम गुरु की दात किस तरह है? जब सतगुरु दयाल पूर्ण दया करते हैं तब वे उस घर का भेद दे देते हैं। सभी मण्डलों का पता देकर वे सब बातें बता देते हैं कि ये जाति नाम है जाति नहीं ये कुल मालिक का निज नाम है और मूल मन्त्र है। मैंने पहले भी एक सत्संग में ये बातें कही थी कि मूल नाम उसे कहते हैं जिससे संसार के शेष सभी नाम प्रगट हुए हैं। सो वह सभी नामों का मूल नाम है। उसको हम मूल–मन्त्र भी कह देते है। उसे ही जाति या धुनात्मक नाम कह देते हैं। आपको १० किस्म की धुनियों का तो पता है। नौ किस्म की धुनी तो उसी में से फूटी हुई हैं। दसवां शब्द



ही मूल शब्द है। अपने शास्त्रों के अनुसार यह बात तो सभी भाईयों को माननी ही पड़ेंगी। शिव जी ने भी यह पार्वती को बताया है। उसने कहा है कि हे पार्वती ! अगर तू उस शब्द को पूछना चाहती है तो सुबह उठ, तीनों बन्द लगाकर ये शिव पुराण की बातें हैं, मैंने ये किसी समय में सुनी थी, उस शब्द को सुनो। वह शब्द कौन सा है? इसमें से ६ शब्द बनते हैं और यह दसवां शब्द हैं। सो इसमें से ही ये नौ अंकुर फूटे हैं। आप लोग इस बात को समझते हो। इसी तरह से जो अठारहवीं मंजिल से धुनी चलती है वह नाम मूल मन्त्र है। फिर ज्यों–ज्यों नीचे आते चले गए, जो भी जिस मंजिल का वाकिफकार आया, उसी नाम को उसने बड़ा मान लिया। इसी कारण से हमारे देश में अनेक मजहब पैदा हो गए। आगे का रहबर (मार्ग दर्शक) मिला नहीं। लोग उसी को बड़ा मानकर वहीं बैठते गए। वहीं बैठकर उन्होंने सारे जीवन को खराब कर लिया। जैसे पहले योगी लोग छठे चक्कर पर ही मुश्किल से पहुंचा करते थे। वहीं पहुंच कर वे कह दिया करते थे कि मुश्किल है तुरिया पद का पावना। वे आगे चलना कठिन बताया करते थे। वही लोग आज वहां से अपना अभ्यास शुरू करते हैं। छठे चक्कर से तो योग की अलिफ–बे–पे शुरू होते हैं। सो वह नाम तो बहुत ही ऊंची दौलत है। नाम जिसको मिल जाता है और जिसको उसका पता चल जाता है उसे कोई परवाह नहीं रहती है और उसका जीवन ही शुरू हो जाता है। नाम तो सारी ही दुनिया लेती है। पर जिसे वह अठारहवीं मंजिल का नाम मिल जाता है तो उसे शान्ति मिल जाती है। बाकी को तो शान्ति नहीं मिलती है। जिनको शान्ति नहीं मिली है तो समझ लो कि वे उस नाम के नजदीक नहीं गए हैं। कई बार कबीर साहब का शब्द सुना है–

**मस्तक लाग रही, मेरे गुरु चरणों की धूल।**
**जब वह धूल चढ़ी मस्तक पर दुविधा हो गई दूर।।**

वास्तव में धूल तो मस्तक पर रहती है। वह तो कभी भी उतरती नहीं है। जब हमारी सुरत वहां उलट कर चली जाती है, जहां मस्तक पर सन्तों के चरण की धूल लगी हुई है तब पता चल जाता है कि ये सन्तों के चरण हैं और उस जगह पर पहुंचने पर शान्ति मिलती चली जाती है और आगे से आगे वह बढ़ती ही चली जाती है। पर मैंने शाम को थोड़ी सी बातें बताई थीं आपको कि आप इस प्रकार से अपना एक टाइम बनाओ। तुम अपने धर्म को समझो। अगर तुम अपने धर्म को समझ गए तो जीवन सफल हो जाएगा। तुम्हारा काम भी पूर्ण बन जाएगा। वही बात अब बताई है कि नाम के बिना तो किसी का घर भी नहीं मिलता है। नाम के बिना तो मनीआर्डर और चिट्ठी नहीं आती है। नाम के बिना नामी नहीं मिलता है। जब तुम नामी से मिलना चाहते हो तो नाम तो तुम्हें लेना ही पड़ेगा। एक आदमी के दस नाम हैं। तो फिर किस नाम से वह जागेगा नाम तो एक ही होता है असली तो। सो सन्तमत में बताया जाता है कि एक ही सन्त सतगुरु होता है। वह सन्त सतगुरु कौन है? सन्त सतगुरु वही होता है जो सतलोक से आगे का जानकार हो। सन्तमत में यही बताया जाता है कि सतगुरु एक ही होता है सो नाम भी एक ही है। वह नाम सारी दुनिया की जान होता है। वह नाम जाति (धुनात्मक) है। सिफाती या वर्णात्मक नहीं है। सो ही महात्मा उसका यू वर्णन करते हैं–

**दुनिया ढूंढे, त्रिलोकी माहिं।**
**नाम रहे चौथे लोक माहिं।।**

चौथा लोक वही है जो तीन गुणों से आगे का है। जब तुम तीन गुणों से आगे जाओगे तभी पता चलेगा कि नाम तो इस जगह पर है। उस नाम से हम नामी के पास पहुंच जाते हैं। यही थोड़ी सी बातें थीं। पर ये बातें कहने की नहीं हैं करने की हैं। महात्मा लोग कहते हैं कि कहने से कुछ नहीं बनता है सो करके देखो।



**ये करणी का भेद है, नहीं बुद्धि विचार।**
**बुद्धि छोड़ करणी करे, तब पावे कुछ सार।।**

अर्थात् बुद्धि को छोड़ कर करणी करना चाहिए। तब तुम्हें खुद ही उस नाम का पता चल जाएगा। सो प्रेमियो, सत्संगियो ! मैंने आपको नाम के विषय में ज्यादा बातें तो नहीं कही हैं। मैंने तो आपको यही बताया है कि नाम की तलाश करो। नाम जंगलों और पहाड़ों में तीर्थ–व्रतों में नहीं है। मन्दिर, मस्जिद व गुरुद्वारों में नहीं है। नाम तो हमारे अन्दर धुनकारें दे रहा है। हर वक्त ही। उसको कोई नाम कहता है और कोई शब्द कहता है। कोई सतगुरु कहता है और कोई ज्ञान समझ या विवेक कहता है। जो असली होता है उसे ही विवेक कहा जाता है। सच्चाई का ही नाम विवेक है। असली तो शब्द ही है। शेष तो सभी चीजें नकली हैं। जब हमें उस असल वस्तु का पता चल जाता है तो फिर हम नकली में नहीं फंसते हैं और हम उस काल माया से बच जाते हैं। पर आपके मन में यह बात जरूर हाई होगी और यह आपका प्रश्न होगा कि हम किस तरह से उसको प्राप्त करें। यही बात शाम को भी बताई थी और यह अब आ गई है कि–

**चाहना रख एक राम नाम की, सोने धोने धो देगी।**
**इससे दूजी चाहना, तुझे दुनिया जहान से खो देगी।।**

इसी अभ्यास को चाहे दो मास का समझ लो या इसे ७ दिन का समझ लो। चाहे इसे ४ या ६ महीने का समझ लो। एक चाहना यही बात रामायण वाले ने भी कह दी है–

**कलजुग केवल नाम आधारा।**
**सुमर सुमर नर हो गए पारा।।**

पर यही बातें मैंने आपको पहले बता दी थीं कि नाम तो चौथे लोक में हैं। वहां जाने के लिए हमें किसी अच्छे रहबर की शरण लेनी पड़ती है। बनावटी रहबर नहीं होना चाहिए। वह बनावटी तो

हमें भी बनावटी ही बना देगा। असली रहबर मिल जाएगा तो हमें भी असली ही बना देगा। बस इतनी ही बातें मैं कहना चाहता था। अपना अभ्यास किया करो। मैंने भी अपना आइम बिताया है और अब भी बिता रहा हूं। शाम को भी मैंने आपको यह बात बताई थी कि कितनी भारी हलचल चारों तरफ है फिर भी अपना टाइम निकाल लेता हूं और अगर कोई यह कहे कि हमें तो नींद आती है। मैं सच कहता हूं कि जिसको ख्याल होता है और मौत खड़ी दिखाई देती है सिरहाने पर वह कभी भी नहीं सोता है। सो अगर आप ये सोच लोगे कि टाईम तो बहुत थोड़ा है और अगर जल्दी कर भी ले तो अच्छा है। उस वक्त तो नींद नहीं आएगी और भूख भी दूर चली जाएगी। एक वही लग्न लगी रहेगी। उस शब्द और उस सतगुरु की ही लग्न लगी रहेगी उस लगन में इतने मग्न हो जाओगे जैसे कामी आदमी ! आपने और हमने देखे हैं कि वे अपनी बेइज्जती भी करवा लेते हैं। वे अपने खानदान की बेइज्जती भी करवा लेते हैं। छतों के ऊपर ही ऊपर कूदते फिरते रहते हैं। चोरों को भी रखा होगा, पराए धन को लूटने के लिए कितने मारे–मारे फिरते हैं? वे अपनी और अपने खानदान की बेइज्जती करवा लेते हैं और कई कइयों की तो देही भी पुलिस तोड़ देती है। फिर भी उस चस्के को नहीं छोड़ते हैं। वह चस्का तो गिरा हुआ और बहुत बुरा है। सन्त को नाम का चस्का तो इतना प्यारा है कि जिसको नाम का चस्का पड़ गया वह इनके बराबर तो नहीं है। वह तो बहुत ऊंचा चस्का है। जिसको नाम का आनन्द और प्यार आ गया है वह सभी प्यार भूल जाता है। उसको तो एक वही प्यचार होता है। जैसे लड़की अपनी ससुराल जाती है तो उसमें एक अपने पति का ही प्यार रहता है। इसी प्रकार अगर इनसान समझे तो हमारा पति भी वही शब्द है। हमारे अन्दर वही शब्द का ही प्यार रहता है। झूठा प्यार नहीं रहता है। तभी तो उसका काम बनता है। जब तक



दूसरे का प्यार है तो फिर तो प्यार बंट जाता है। फिर हम कभी वहां नहीं पहुंच सकते हैं। सो उस नाम का ही सहारा लेना चाहिए। वह नाम सारी दुनिया की जान है। वही सब का कर्ता है। इसीलिए मैं उस नाम की बड़ाई करता हूं और नाम की महिमा ही इस शब्द में गाई है। सभी नाम की ही बड़ाई करते हैं और ज्यादा बातें मैं आपको क्या कहूं? मैंने तो दस मिनट नाम के बारे में ही बातें बताई हैं। सच पूछा जाए तो जब तुम नाम की शरण में चले जाओगे, जब तुम नामों की मंजिलों को तय करते हुए ऊपर जाओगे तो तुम सभी आनन्द भूल जाओगे। सभी सुखों को भूल जाओगे। क्योंकि सभी सुख उस सतलोक के सुख से नीचे ही नीचे हैं। सभी सुख फनां होने वाले हैं। सभी मिटने वाले हैं। वही एक सुख है जो कभी मिट नहीं सकता है। वह अमर सुख है। तुम थोड़े–थोड़े सुखों के लिए बेहद प्रयत्न करते हो। सोचो, जब दूध नहीं है तो उस थोड़े से सुख की खातिर भैंस लाते हो। सोचते हो चार बच्चे पीछे छोड़ जाऊं, थोड़े से सुख के लिए शादी करवाते हो और फिर भी कहते हो कि मेरी तो पार नहीं पड़ेगी। जिसके घर में हल नहीं। सोचते हो कि घर में अनाज हो। हल जोड़ते हो। जमीन खरीदते हो। रहने के लिए भी मकान बनाते हो, भट्ठा लगाते हो। ईंट पकाते हो, फिर मकान बनाते हो। थोड़ा सा ही सुख होता है। जब वह सुख पूर्ण मिल जाता है तो फिर हम सभी सुखों को भूल जाते हैं। बल्कि मैंने एक मिसाल सुनी थी।

किसी महात्मा के पास कोई राजा चला गया। राजा ने देखा कि महात्मा मस्त बैठा है। राजा ने कहा–महाराज ! मैं फलों शहर का राजा हूं। महात्मा ने कहा–अच्छा राजन ! मुझे पता नहीं था। आप बताओ। राजा ने कहा–मैं राजा हूं। मेरे लायक कोई काम हो तो बता दो। उस महात्मा ने क्या मांगा? इसका नाम है कि जब उस शब्द का आनन्द आ जाता है। दूसरा बाधा जो डालता है उसे

मुश्किल हो जाती है वह ऐसे ही है जैसे कोई किसी के घर में पाड़ लगा लेता है कोई अगर दूसरा आदमी उसके पीछे से बोल पड़ता है तो उस पाड़ लगाने वाले को तो बेहद दुख होता है। अब अगर कोई घटिया काम करने के लिए जाता है और कोई देख लेता है और अगर उसे कुछ बोल देता है तो उसे भी भारी दुख होता है। इसी तरह जो नाम की कमाई करता है और जिसे नाम का रख आ जाता है उसके बीच में कोई बोल सकता है उसको भी उतना ही दुख होता है। गन्दी मिसाल आपको क्या दूं? आप समझदार ग हस्थी हो। मैं इससे बच गया हूं। सतगुरु की दया हो गई तो उसमें क्या आनन्द होता है? वह घबरा जाता है। किस तरह? तो उस वक्त उस महात्मा ने कहा–राजन ! मैं एक ही विनती करता हूं कि आइन्दा मेरे पास न आना और किसी दूसरे आदमी को भी न आने देना। बस, कोई आदमी न आए। सब को बन्द कर देना। मेरी बस यही विनती है। क्योंकि उसके आनन्द में बाधा पड़ती थी। सो जब आदमी नाम की कमाई करता है और नाम में यह तल्लीन हो जाता है उसे और तो कोई भी चीज नहीं चाहती है। इसको कहते हैं कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं आती हैं। वह तो नाम में ही रंगा जाता है। उसे और कोई भी सहन नहीं होता हैं वह मस्त होकर सब कुछ भूल जाता है वह एक सुख इतना अटल है कि और सभी सुख भूल जाता है। वह महापवित्र सुख है। उस सुख के लिए वह एक यत्न है कि नाम के ही रंग में रंग जाओ। उस नाम का इतना ध्यान होना चाहिए कि सुमरन तार टूट न जाई। जब उस सुमरन का तार नहीं टूटेगा तो जीवन सफल ही सफल है। यह है नाम की महिमा। आगे तुम्हारी मर्जी। ज्यादा मैं नहीं कह सकता और कहने की जरूरत भी नहीं है। इतना ही काफी है। थोड़ा ही काफी होता है। सो अब चार बज गए हैं। मुझे जाना है। सारी संगत से मैं यह विनती करता हूं कि यह न सोचना



कि महाराज जी तुम्हारे पास से गया। यह सोचना कि महाराज जी तुम्हारे पास में है। जो भाई सेवा देने वाले हैं वे भाई उसी तरह से सेवा दें। सभी सेवादार अपनी ड्यूटी पांच बजे तक जरूर उसी तरह करें। विनती, प्रार्थना करना। यह भी बताता हूं कि मेरे आगे पड़ने की कोशिश न करना। मैं जा रहा हूं मुझे जरूरी काम हो गया है। नहीं तो इतनी जल्दी करके नहीं जाता।

।। राधास्वामी ।।

## ध्यानाकर्षण बिन्दू

**सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।**

## जून/जुलाई मास के लिए सेवा कार्यक्रम

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | हांसी | 18 जुलाई | - | 24 जुलाई |
| 2. | पुट्ठी सामाण | 25 जुलाई | - | 31 जुलाई |
| 3. | मोठ | 01 अगस्त | - | 07 अगस्त |
| 4. | अण्टा | 08 अगस्त | - | 14 अगस्त |
| 5. | बरवाला | 15 अगस्त | - | 21 अगस्त |
| 6. | फतेहाबाद | 22 अगस्त | - | 28 अगस्त |

## आगामी मास के सत्संग

# संत की पहचान

महर्षि शिवव्रत लाल जी

संत की पहचान क्या है ?

इसका उत्तर देना हमारी सामर्थ्य से बाहर है। संतमत के ग्रंथों में वर्णन है।

**साध का निरख आंख और माथा।**
**सत का नूर रहे जिस साचा।**
**यह चिन्ह देख करे पहचान।**
**गुरु पूरे का जिसको ज्ञान।।**

चौड़ा माथा विशाल हृदय होने का चिन्ह है। वह पक्षपाती, कट्टर और ईषालु न होगा। उसमें अध्यात्म की फुरना जोर शोर के साथ होगी।

आंख से अभिप्राय यह है कि किसी ऐसे मनुष्य को गुरु न करना चाहिये जो अंधा, काना या ऐचाताना है या उसकी आंख में फूली है क्योंकि बुद्धिमानों का कथन है-

**सो में सूर सहस काना। सवा लाख में ऐंचाताना।।**

जो अन्धा होगा उसमें शील, संकोच और प्रेम प्रीति न होगी। शील, प्रेम, लाज, सदाचार और नम्रता का सम्बन्ध अधिकतर आंखों से है। अंधे सैकड़ों आदमियों की भीड़ में रहकर उनको तितर-बितर कर देते हैं।

काना उसे कहते हैं जिसकी एक आंख हो। वह इतना झगड़ालू और चालाक होता है कि हजारों को अपने दुराचारों से छिन्न-भिन्न कर देता है। इन दोनों का दर्जा यद्यपि बहुत नीचा है मगर सबसे झगड़ालू ऐंचाताना होता है, क्योंकि वह जन्म से ही अंगहीन है। यह अपनी खराब आदत से लाखों आदमियों को बीच भेदभाव और भिन्नता पैदा कर देगा। वह रूहानियत में कभी भी उन्नति नहीं कर सकेगा। सिवाय झगड़ा मचाने के उसका और कोई काम न होगा।

ऐंचाताना उसे कहते हैं जिसकी कोई आंख ऊपर की और चढ़ी होगी या एक आंख छोटी और दूसरी बड़ी होगी।

संत या आध्यात्मिक रूप से बढ़े हुए मनुष्य की आंख चमकीली और तेजवान होती है। आंख के ढेले तक में विशेष प्रकार की चमक होती है और सब दोषों से रहित होती है। उसका माथा चौड़ा और तेजवान होता है।



# अनमोल वचन

- जीव को अपने मनुष्य-जन्म का मोल याद रखना चाहिये। समय बीत रहा है और उम्र कम होती जा रही है अतएव मनुष्य को समय रहते चाहिये की प्रभु की भक्ति और प्रेम के मार्ग पर चलें। *-सन्त कबीर साहिब*
- केवल उन्हीं अभ्यासियों का जो जीते जी मुक्ति का अनुभव कर चूके हैं अर्थात् जिन्होंने जीते जी मृत्यु की दशा को पार कर लिया है, मुक्ति प्राप्त करने का दावा सही है। *-संत तुलसी साहिब*
- परमात्मा रचना के कण-कण, पत्ते-पत्ते, जर्रे-जर्रे में व्यापक नजर आता है, परन्तु अज्ञानी माया के भ्रम में, आवागमन के चक्कर और कर्मों के जाल में फंसा रहता है और सर्व व्यापक परमेश्वर के दर्शन नहीं कर पाता। *-संत नामदेव जी*

# ज्ञान-सार

- जिसने अपना अभिमान का बोझ हल्का कर लिया है, वही पार उतर सकता है। जिसने बोझ बढ़ा लिया है, वह तो डूबेगा ही।
- दूसरों से लेने की अपेक्षा देने में जिसे अधिक सुख नहीं मालूम होता वह सच्चा संत नहीं हो सकता।
- दुनिया में घूमना बहुत आसान है, पर उसमें से निकलना उतना ही मुश्किल है।
- जो मनुष्य विपत्ति में भी अपने ऊपर ईश्वर की कृपा को देख सकता है, वह कभी मृत्यु कष्ट के अधिन नहीं हो सकता।
- जिसकी दृष्टि में जन्म और मरण समान हो वही साधु है।

## सत्संग भावांश हिसार 5-4-2005

**सौदा कर चल रे भाई, यहां तो राम नाम तत्सार।**

हम सभी सांसा रूपी पूंजी लेकर संसार में सौदा करने के लिए आए हैं। यदि हम इस पूंजी को सत्य का सौदा करने में लगा देंगे तो हम संसार के जन्म-मरण सहित असंख्य दुखों से अपने आप को बचा कर अपना कल्याण करके चले जाएंगे। यदि अपनी मान बड़ाई अथवा संसारी सौदों में इसे लगा देंगे तो अन्त समय में रोने-धोने और पछताने के सिवाय कुछ भी हमारे हाथ नहीं लगेगा।

एक भाई ने अभी एक कागज लिख कर भेजा। उसने इस पर लिखा कि अब मेरे पास 'अ' नहीं है, आप 'क' मुझे दे दो। मैंने कागज पर ही लिख दिया कि 'क' तो मैं दे दूंगा, तुम 'प' ले आओ। उसके पास कागज पहुंचते ही मेरे पास आया और उसने कहा-मेरा मतलब तो यह था कि अब मैंने 'अ' यानि अहंकार त्याग दिया है अब आप मुझ पर 'क' यानि कृपा कर दो। मैंने कहा मैंने भी गलत नहीं लिखा है। मैंने यही लिखा है कि तुम्हारे पास में 'प' यानि पात्र नहीं है इसलिए 'क' यानि कृपा नहीं मिलेगी।

**पिया को पाती लिखूं, जो कहीं हो परदेश।**
**तन में, मन में, सांस में, ता को क्या सन्देश।।**

पत्र तो उसी को लिखा जाता है जो कोई परदेश में रहता हो। परन्तु वह मालिक तो तन, मन और सांस-2 में है उसको सन्देश देने की आवश्यकता नहीं है। पात्र बन जाओ। परन्तु इतना होने पर भी वह भाई चुप नहीं रहा। उसने आगे कहा-मान लो मैं पात्र हूं तो आप मुझे 'क' यानि कृपा दे दोगे, फिर आपके पास दूसरों को देने के लिए



क्या बचेगा? मैंने उसको समझाया कि जो पूर्ण होता है वह एक पात्र को पूर्ण मिल जाने के बाद भी अपने स्थान पर वह पूर्ण ही रहता है। यदि फिर दूसरा पात्र आता है तो उसको भी वह पूर्ण ही मिल जाता है। फिर भी उस पूर्ण में कोई कमी नहीं होती है। पूर्ण तो अपने स्थान पर हमेशा पूर्ण ही रहता है।

सन्त पात्र बनाने के लिए वचनों के घड़-2 करके बाण मारते हैं। परन्तु जीव उन बाणों को ओटने के स्थान पर उनसे बचने की कोशिश करता रहता है। किसी बाण के बाईं ओर से किसी के दाईं ओर से किसी के ऊपर और किसी के नीचे होकर वह उनसे बचता ही रहता है। वह समझता है कि मालिक ने ये बाण तुझे बीन्धने के लिए नहीं छोड़े हैं, ये तो औरों को बीन्धने के लिए ही छोड़े हैं। यदि कोई जीव मालिक के वचनों के बाणों के आगे अपनी छाती सामने अड़ाकर बिन्धवा ले तो वह पात्र हो जाए, और मालिक उसको अपनी कृपा से मालामाल ही कर दें। परन्तु लोग सच्चाई का सौदा करने नहीं आते हैं वे तो यहां संसारी चीजों का सौदा करते रहते हैं। सन्त तो जीवों की संसारी चाहें भी पूरी करते हैं। इसलिए वे उनको वैसा ही सौदा देकर भेज देते हैं। वे फिर छोटी-मोटी और भी मांग करते हैं तो सन्त सब्जी विक्रेता की तरह से हरी मिर्च और धनिया जैसी चीजें उनकी तरफ फेंक कर कहते हैं कि चल, यह फ्री में और भी ले जा। सच का सौदा करने मालिक के पास कोई बिरला ही पहुंचता है। मालिक उसको भी पहचान लेते हैं, तो कहते हैं कि हां, बैठ भाई, तुझे मैं पूरा तोलकर तेरा सौदा दूंगा। अफसोस की बात है कि ऐसे लोग आते ही नहीं हैं। संसारी चीजों के ग्राहक ही उनके पास आते हैं। फिर बेचारे सन्त सतगुरु का तो कोई दोष नहीं होता है। फिर तो वही बात होती है जैसे अभी एक भाई ने यह वाणी कही थी-

**मारी थी लागी नहीं बंकनाल में फूंक।**
**गुरु बेचारा क्या करे, चेले माहीं चूक।।**

''मैं कृष्णपाल सिंह मूलत: गांव बुढसैनी, जिला बागपत, उत्तर प्रदेश का निवासी हूं, अब बुराड़ी गांव दिल्ली में रह रहा हूं। मेरी शादी 25-4-1994 को हुई थी, दस वर्ष बाद तक भी मेरे यहां कोई सन्तान नहीं थी। इस बीच हमें काफी इलाज कराया, कई वर्ष पहले हमने थक हार कर सभी इलाज बन्द करा दिये थे। मैंने 5 जुलाई 2001 को गुरु पूर्णिमा के दिन राधास्वामी आश्रम भिवानी में महाराज जी से नामदान लिया। मेरे छोटे भाई के यहां 13-10-2002 को एक पुत्र ने जन्म लिया। मुझे बहुत खुशी हुई, लेकिन इस बच्चे ने पैदा होने के 36 घंटे बाद तक भी पेशाब नहीं किया। मैंने डॉक्टर से बात की व बच्चे की जांच करने को कहा, लेकिन डॉक्टर ने सब कुछ सामान्य बताया। तभी एक बूढ़ी मां ने, जो वहीं बैठी थी हमसे कहा कि तुम्हारे यहां किसी देवी-देवता की पूजा होती हो, उसके नाम का रुपया उठा कर रख दो। तभी मुझे महाराज जी का ध्यान आया, मैंने मन ही मन महाराज जी से विनती की कि महाराज जी कल दशहरे का सत्संग जो नजफगढ़ में है मैं उसमें नहीं आ पाऊंगा, इसीलिये यदि मुझे सत्संग में बुलाना चाहते हो तो बच्चे को ठीक कर दो। तभी पांच मिनिट में ही वह चमत्कार हुआ और बच्चे ने अस्पताल का बिस्तर गीला कर दिया। तभी हम जच्चा बच्चा को छुट्टी दिलवा कर घर ले आये। इसके बाद मेरे कुछ शुभ चिन्तकों ने मुझसे कहा कि महाराज जी सेब का प्रसाद बनाकर देते हैं आप भी अपनी पत्नी को साथ लेकर किसी दिन दिनोद आश्रम में महाराज जी से प्रसाद बनवा कर खिलाओ, तो आपके यहां भी मालिक मौज करेगा। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि मुझे मालूम था कि मेरे महाराज जी अन्तर्यामी हैं, उन्हें तो सभी का ख्याल है। मेरी जीजी व जीजा भी मेरी ओर से बहुत ही चिन्तित थे। उन्होंने भी मेरी पत्नी को मेरठ ले जाकर इलाज शुरू कराया, मगर दो तीन महीने बाद भी कोई बात



नहीं बनी। फिर उन्होंने दूसरी डॉक्टर से इलाज शुरू कराया, उस डॉक्टर ने सभी वही टैस्ट जो हम कई वर्ष पहले करवा चुके थे, दोबारा कराने के लिए लिख दिये। तभी मैंने कहा कि मुझे ई.एस. आई. सुविधा उपलब्ध है, तो मैं प्राईवेट इलाज नहीं कराऊंगा। मैं ई.एस.आई. से ही इलाज कराऊंगा। मगर पहले मैं एक बार महाराज जी के दर्शन करके आऊंगा। उसके बाद जैसा तुम कहोगे मैं करूंगा। मैं 29-3-2004 को महाराज जी के दर्शन व सत्संग सुनने के लिए भिवानी आश्रम गया और सत्संग सुनते-2 ही मैंने महाराज जी से प्रार्थना की कि महाराज जी अब तो आपको कुछ करना ही पड़ेगा, नहीं तो काफी परेशानी हो जाएगी। और मेरे मालिक ने मेरी इसी प्रार्थना को सुन लिया व उसी माह मेरी पत्नी को गर्भ धारण हो गया। मेरी पत्नी शुगर की मरीज थी व रोजाना 500 एम.जी. की मैट फार्मिन गोली दिन में तीन बार खाती थी व और भी शारीरिक परेशानी थी, लेकिन महाराज जी ने ऐसा करिश्मा किया जैसे परमात्मा खुद मेरे घर खुशियां लेकर आ गया हो। 29-10-2004 को बड़े ऑपरेशन से मेरी पत्नी को बेटी पैदा हुई। कुछ परेशानियां जरूर आई मगर महाराज जी ने एक-2 करके सबको हल कर दिया। अब पत्नी व बेटी हम ठीक-ठाक हैं व महाराज जी से आशा व प्रार्थना करते हैं कि जैसी दया मुझ पर की है ऐसी सब पर करें। राधास्वामी ।''

-कृष्णपाल सिंह,
विजय कालोनी, बुराडी विस्तार, दिल्ली-84

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

एक राजा प्रतिदिन 101 ब्राह्मणों को भोजन कराता था तथा 101 गायों का दान करता था। इतना दान पुण्य करके स्वयं भोजन करता था।

एक दिन वह जंगल में शिकार खेलने जा रहा था। रास्ते में एक कुतिया ने बच्चे दिये थे तथा प्यास से बिलबिला रही थी। राजा घोड़े से उतरा अपनी छागल में से कुतिया को पानी पिलाया और आगे चला गया।

बहुत दिनों के बाद नारदमुनि दरबार में आये। राजा से प्रार्थना की-महाराज आपने जो दान और पुण्य कर्म किये हैं, उनमें से केवल एक दान मेरे निमित्त कर दें।

महाराज ने उत्तर दिया कि उन्होंने तो लाखों गऊ दान किये हैं। जितने चाहो अपने निमित करवा लो। नारद जी ने कहा-एक दिन आपने एक कुतिया को पानी पिलाया था। वह जलदान मेरे निमित कर दो।

महाराज बोले-भला वह भी कोई दान था। किसी बड़े दान की बात कहिए। नारद जी ने उत्तर दिया-राजन दान तो केवल एक वही था। बाकी तो सब पाखण्ड है, लोग दिखावा है, अपने बड़पतन का विज्ञापन है।

**राहे अदम में चोर भी मिलता नहीं कोई।**
**जो सिर से ले उडे मेरी गठडी गुनाह की।।**



## कहानी

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वपन्ना व बोधस्य योगो भवति दु:खहा।।

योग शब्द उस ध्यान योग का वाचक है, जो सम्पूर्ण दुखों का नाश करके परमानद और परम शानित के समुन्द्र परमात्मा की प्राप्ति करा देने वाला है।

उचित मात्रा में नींद ली जाये तो उससे थकावट दूर होकर शरीर में ताजगी आती है, परन्तु वही नींद यदि आवश्यकता से अधिक ली जाये तो उससे तमोगुण बढ़ जाता है, जिससे अनवरत आलस्य घेरे रहता है और स्थिर होकर बैठने में कष्ट मालूम होता है। इसके अतिरिक्त अधिक सोने में मानव जीवन का अमूल्य समय भी नष्ट होता है। कभी ताजगी नहीं आती। शरीर, इन्द्रिय और प्राण शिथिल हो जाते हैं, शरीर में कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

खाने-पीने की वस्तुएं ऐसी होनी चाहिये, जो सत्य और न्याय के द्वारा प्राप्त हो और सात्विक हो, रजोगुण और तमोगुण को बढ़ाने वाली न हो। पवित्र हों तथा योग साधन में सहायता देने वाली हो। उनका परिणाम भी उतना ही परिमित होना चाहिये, जितना अपनी शक्ति स्वास्थ्य और साधन की दृष्टि से हितकर एवं आवश्यक हो। इसी प्रकार घूमना-फिरना भी उतना ही चाहिये, जितना अपने लिये आवश्यक और हितकर हो।

वर्ण, आश्रम, अवस्था स्थिति और वातावरण आदि के अनुसार कर्तव्य कर्म बतलाये गये हैं, उन्हीं का नाम कर्म है। उन कर्मों का उचित स्वरूप में और उचित मात्रा में यथायोग्य सेवन करना ही कर्मों में युक्त चेष्टा करना है। जैसे परमात्मा की भक्ति, दीन-दुखियों की सेवा, माता-पिता, गुरुजनों का आशिर्वाद, दान आदि। जीविका सम्बन्धी कर्म यानि शिक्षा, पठन-पाठन व्यापार आदि कर्म और शौच-स्नानादि क्रियाएं, ये सभी कर्म कर्म वे ही करने चाहिये जो

## कहानी

**युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।**
**युक्तस्वपन्ना व बोधस्य योगो भवति दुःखहा।।**

योग शब्द उस ध्यान योग का वाचक है, जो सम्पूर्ण दुखों का नाश करके परमानद और परम शानित के समुन्द्र परमात्मा की प्राप्ति करा देने वाला है।

उचित मात्रा में नींद ली जाये तो उससे थकावट दूर होकर शरीर में ताजगी आती है, परन्तु वही नींद यदि आवश्यकता से अधिक ली जाये तो उससे तमोगुण बढ़ जाता है, जिससे अनवरत आलस्य घेरे रहता है और स्थिर होकर बैठने में कष्ट मालूम होता है। इसके अतिरिक्त अधिक सोने में मानव जीवन का अमूल्य समय भी नष्ट होता है। कभी ताजगी नहीं आती। शरीर, इन्द्रिय और प्राण शिथिल हो जाते हैं, शरीर में कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

खाने-पीने की वस्तुएं ऐसी होनी चाहिये, जो सत्य और न्याय के द्वारा प्राप्त हो और सात्विक हो, रजोगुण और तमोगुण को बढ़ाने वाली न हो। पवित्र हों तथा योग साधन में सहायता देने वाली हो। उनका परिणाम भी उतना ही परिमित होना चाहिये, जितना अपनी शक्ति स्वास्थ्य और साधन की दृष्टि से हितकर एवं आवश्यक हो। इसी प्रकार घूमना-फिरना भी उतना ही चाहिये, जितना अपने लिये आवश्यक और हितकर हो।

वर्ण, आश्रम, अवस्था स्थिति और वातावरण आदि के अनुसार कर्तव्य कर्म बतलाये गये हैं, उन्हीं का नाम कर्म है। उन कर्मों का उचित स्वरूप में और उचित मात्रा में यथायोग्य सेवन करना ही कर्मों में युक्त चेष्टा करना है। जैसे परमात्मा की भक्ति, दीन-दुखियों की सेवा, माता-पिता, गुरुजनों का आशिर्वाद, दान आदि। जीविका सम्बन्धी कर्म यानि शिक्षा, पठन-पाठन व्यापार आदि कर्म और शौच-स्नानादि क्रियाएं, ये सभी कर्म कर्म वे ही करने चाहिये जो



किसी का अहित करने वाले न हो, किसी को कष्ट पहुंचाने या किसी पर भार डालने वाले न हो और ध्यान योग में सहायक हो तथा इन कर्मो का परिमाण भी उतना ही होना चाहिये, जितना जिसके लिये आवश्यक हो, जिससे न्यायपूर्वक शरीर निर्वाह होता रहे और ध्यान योग के लिये पर्याप्त समय मिल जाये। ऐसा करने से शरीर, इन्द्रिय और मन स्वस्थ रहते हैं और ध्यान योग सुगमता से सिद्ध होता है।

दिन के समय जागते रहना, रात के समय पहले तथा पिछले पहर में जागना और बीच के दो पहरों में सोना साधारणतया इसी को उचित सोना-जागना माना जाता है।

महा-।।।/2649